

आरंभ

जो आज है उससे बेहतर रचना की प्रक्रिया में

सम्पादक

दादू दयाल

सम्पादक मंडल

सांवलाराम डाहरे

कोमलसिंह शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक

चन्दनसिंह ठोस

प्र. ले. सं. राजहरा की साहित्यिकी



अप्रैल १९८८

अंक - चार

सम्पादकीय

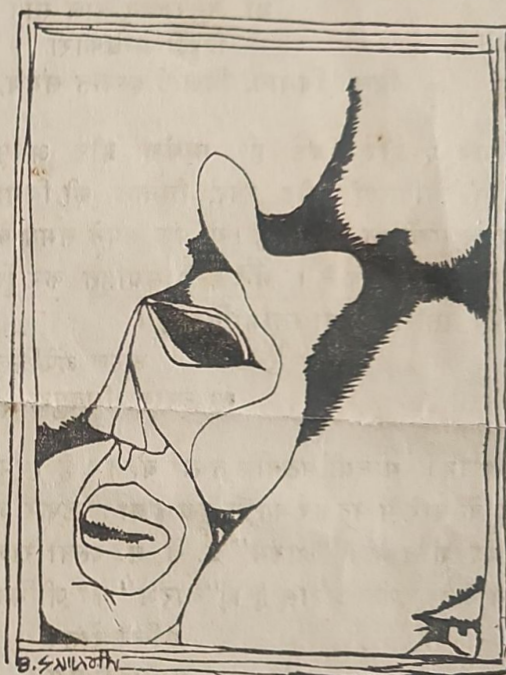
आरंभ और अंतराल

“आरंभ” का यह अंक काफी देर से निकल रहा है। तीसरा अंक अक्टूबर ८६ में निकला था। उसके बाद डेढ़ वर्ष का अन्तराल रह्य इसके प्रकाशन में। विलम्ब के कारणों का विस्तार पूर्वक उल्लेख करना तो पिछट पेशण मात्र होगा; क्योंकि प्रकाशन जगत से जुड़े पाठकों और रचनाकर मित्रों को लघु एवं अव्यावसायिक प्रकाशन की समस्यायें भलीभांति ज्ञात हैं। वे इस पर कई बार चर्चा कर चुके हैं। फिर भी हमारे ऐसे मित्रों की जानकारी के लिए; जो इस तरह के अनुभव से अनभिज्ञ हैं; इतना बता देना ही पर्याप्त है कि यह अति समय, श्रम और अर्थ साध्य कार्य है। अपने दैनंदिन कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वह करते हुए, शेष समय में ही यह कार्य सम्पन्न करना होता है।

बहरहाल ! काफी विलम्ब हुआ। जो उचित नहीं था। इस बीच वरिष्ठ रचनाकारों हमउम्र मित्रों और शुभचिन्तकों के पत्र हमें निरन्तर मिलते रहे। उन पत्रों में मुख्य रूप से प्रशंसा होती थी और होता था “आरंभ” को निरन्तर निकालते रहने का आग्रह। दूर-दराज के ऐसे साहित्य प्रेमियों के भी पत्र मिले जिन्हें हम जानते भी नहीं। उनको भी शुभकामनाएं “आरंभ” को मिली। “आरंभ” अपने तीन अंकों के माध्यम से ही रचनाकारों और साहित्य प्रेमी मित्रों में प्रिय हो जायेगा; इसका हमें पूर्वानुमान नहीं था। स्थानीय बुद्धिजीवी भी इसे शीघ्र प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहित करते रहे। फलस्वरूप इसका यह ‘चौथा अंक’ आपके हाथों में जा रहा है। स्नेहाकांक्षो होकर।

भाऊ समर्थ की षष्ठि पूर्ति

प्रकृति के लाडले पुत्र भाऊ समर्थ की षष्ठि पूर्ति का वष है यह १९८८ इसी प्रसंग पर २०-२१ फरवरी को इन्दौर में (शेष पृष्ठ ८ पर)



भाऊ समर्थ : एक परिचय

कला और साहित्य की दुनिया में भाऊ समर्थ एक जाने माने और अत्यन्त सम्मानित कलाकार हैं। प्रगतिशील कला और विचार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। पिछले तीन दशक से वे लगातार सक्रिय हैं साहित्य की शायद ही कोई ऐसी पत्रिका होगी जिसमें उन्होंने अपना कलात्मक योगदान न दिया हो। मार्क्सवाद की विचारधारा और जनवादी कला के लिए उन्होंने चित्रकला और रेखांकन का उपयोग किया। यह अटूट कार्य उन्होंने लगभग चुपचाप बिना आर्थिक उम्मीद के किया है। उन्होंने बाजार और पूंजीवादी कला के सारे चमकीलेपन से अपने को दूढ़ता के साथ अलग रखा। एक गर्वीले सर्वहारा का जीवन जीते हुए भाऊ ने हमारी कलाकार बिरादरी की संघर्ष शक्ति को बयस कर दिया है। भाऊ समर्थ ने कला के ऊपर विस्तृत लेखन किया है और मराठी की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में बहु-सब प्रकाशित है।

भाऊ समर्थ ने नागपुर में रहते हुए एक सामाजिक कार्यकर्ता (शेष पृष्ठ ८ पर)

आपकी चिट्ठी

“आरंभ”—३ मिला। पूरा अंक अपनी विशिष्टता के साथ पठनीय है। स्व. कृष्णकुमार नायक पर सम्पादकीय, ढाहरे की कविता, ठोस जी की स्पर्शमयी कहानी आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं लेकिन सर्वाधिक उल्लेखनीय है राजहरा वनांचल से साहित्यिक हलचलों को रेखांकित करना। सचमुच इस पहल की बहुत पहले से अपेक्षा थी और उसकी आंशिक पूर्ति में आरंभ का संपादक मण्डल कृतकार्य हुआ है; शुभ कामनाएं और बधाइयां भी। फिलहाल प्रकाशन का क्रम बनाए रखें।

डॉ. मनराखन लाल साहू
हिन्दी अधिकारी

हिन्दी विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

आरंभ के अंक २ और ३ बड़े ही सार्थक और अर्थपूर्ण हैं। लेख, कथाएँ, कविताएँ और रपटें चिन्तन की विशाल भूमि पर खड़े होकर संकलित की गई हैं। ये अंक अपने समय के प्रगतिशील चिन्तन के दस्तावेज हैं। मैंने इन्हें संग्रहित कर लिया है। शेष अंकों की प्रतीक्षा रहना स्वाभाविक है।

अरुण अपेक्षित
ग्यु ब्लाक, शिवपुरी (म. प्र.)

आरंभ—३ मिला। सामग्री पठनीय तथा बेहतर है। युवा कवि कृष्ण कुमार के बारे में पढ़कर काफी दुख हुआ। पढ़कर जाना कि वे काफी सवेदनशील थे। “आरंभ” प्र. ले. सं. दल्ली राजहरा का सराहनीय व अनुकरणीय प्रयास है। “आरंभ” को जीवित रखें।

एलिकजेन्डर
सम्पादक प्रसंग
मिशन कम्पाउण्ड छपारा (म. प्र.)

आरंभ—३ मिला। इस अंक की सामग्री विविधता पूर्ण है। स्व. कृष्ण कुमार नायक को आरंभ ने याद किया, यही इस अंक की उपलब्धि है।

डॉ. वीरेन्द्रमोहन
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)

आरंभ का तीसरा अंक मुझे प्राप्त हुआ है। बहुत अच्छी सामग्री है इस अंक में। लेकिन मत-सम्मत, विचार गोष्ठी रपट इन सबकी अधिकता लगी। हमारे नये साथी बहुत अच्छा लिख रहे हैं। अच्छा होगा, अब उन्हें अधिक से अधिक स्थान दें।

धानसिंह वर्मा
सहा. प्राध्यापक
डा. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव

आपकी चर्चित साहित्यिक पत्रिका आरंभ कमांक २ और श्री अजित पुष्कल जी के माध्यम से पढ़ने को मिली आपके इन सद्प्रयासों से जहां खुशी हुई वहीं एक सशक्त सम्बन्ध भी मिला। “जो वाज है; उससे बेहतर रचने की प्रक्रिया में।” “आरंभ” की पहल सार्थक सराहनीय कदम है। हम आपसे सम्बन्ध होना चाहते हैं ताकि निरंतर “आरंभ” पढ़ने का सुअवसर मिलत रहे।

अशोक श्रीवास्तव “निर्भीक”
पत्रकार—“समय”
मानपुर—शहडोल (म. प्र.)

“आरंभ” के दो अंक प्राप्त हुए हैं। आरंभ के दोनों अंक बहुत ही उत्सुकता से पढ़े। इनकी विषय वस्तु का चयन बहुत ही अच्छा लगा। “प्रूफ रीडिंग” में ज्यादा ध्यान देंगे। इससे पत्रिका में निखार आयेगा।

अ. कृ. मजुमदार
अध्यक्ष ‘इष्टा’, भिलाई

“आरंभ” का तीसरा अंक प्राप्त हुआ। प्रवेशांक की तरह इस अंक में भी सहज-सरल हिन्दी रचनाओं, संकलनों, का समावेश है। सचमुच इस अंक में “साहित्यिक पत्रिका” का अभाव महसूस किया जा रहा था। इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। इस सार्थक पहल के लिए बधाइयां स्वीकारें।

कंवलदास खरे
हिन्दी विभाग भि. ३ स. भिलाई

आरंभ के सभी अंक मिल गये हैं। ये बेहद पठनीय और सार्थक हैं।

रघुवरदयाल गोहिया
सिहोर (म. प्र.)

कृष्णकुमार नायक की उतरती-चढ़ती सवेदनशीलता के हम तुम साक्षी रहे हैं रचनाओं के जरिए उसने कितनी ही दलित दमित आकांक्षाओं को जन जन तक ले जाने के प्राणतोड़ प्रयास किये हैं। तुमने बहद गंभीरता के साथ उसे कम से कम साहित्यकारों के समक्ष लाया तो सही उसके समस्त रचना संसार पर काम होना चाहिए. . .

रामकुमार रामरिया
सहायक प्राध्यापक
शासकीय फुलझर महाविद्यालय, सरायपाली

पहली कविता

बरसों पहले
जहाँ
जगल के अंधेरे में
पहली बार
गायब हुआ था
अकेला होता हुआ आदमी
ठाक वहीं
उसी जगह
रह गई थी
सूखी झाड़ियों की
झुरमुट में उलझकर
इस दुनियाँ की पहली कविता
किसी पीने उदास चाँह की तरह...
ठीक उसी जगह
जहाँ
वह अकेला आदमी
जंजीरों से बाँध कर
ऊबड़ खाबड़ पथरीली जमीन पर
घस टा गया था
~~और फिर~~
उधेड़ दी गई थी
उसकी चमड़ी
सनसनाते कोड़ों की मदद से
ठीक वहीं
ठीक उसी वक्त
उधड़ी चमड़ी से खून बहाते
घावों के समीप थी
इस दुनिया की पहली कविता,
टीसते घावों पर मलहम लगाते हुए
किसी कोमल हाथ की तरह
“जो हाँ”
बिल्कुल करीब थी
इस दुनियाँ की पहली कविता...
दोस्तों।
मेरी समझ में
इस दुनिया की पहली कविता
किसी सताए गए
गरोब आदमी की चीख से निकली थी
जो
फाँसी के फन्दे पर झूलते वक्त

पूरी शक्ति से

फूँको
तो
दहकेगी
भाग।
फूँको
तो
होगा
शंखनाद
फूँको
तो
उड़ेगी
धूल।
फूँको
तो
निकलेगी
बदबू।
फूँको
पूरी शक्ति से
तो
छटेगा
बादल
जहाँ
छिपी है
सूरज की
किरण।

सांवलारामडाहरे
दल्ली राजहरा

उसके हलक से अनायास
गर्म हवा सी बही थी
और
राजा के महल की
दीवारों को भेदती हुई
कभी समूचे आसमान में
छा गई थी...।

आलोक वर्मा

विवेकानन्द नगर रायपुर

अकाल के बबूल

खेतों में उग आये हैं
अकाल के बबूल
और बच्चों के पसरे हाथों में
भूख की नागफनी
विवश है वह गाँव छोड़ने को
रोटी महानगर से
हाथ हिला कर बुलाती है
उसकी सोच में हैं
बालियों भरे खेत
दूधिया पखेरू
खेतों में काम करता वह
मेड़ पर से आवाज लगाती बिटिया
हरी जमीन
और नीला आकाश गाती परनी
लेकिन
कूटिया की करुणा भरी आवाज
महानगर की
चीख-चिल्लाहट में खो जाती है
रंभाते गाय-बैलों के चित्र
मोटर गाड़ियों के
पहियों में पिस जाते हैं
बोझिल कदमों से
पार करता है वह
गाँव की दहलीज
काले पानी की सजा की तरह
उसका कर्ज भरा जीवन
नीलाम गाय बैलों की
आँखों में डूब जाता है
और मन
बिके हुए खेत की मेड़ पर
दफन हो जाता है
लेकिन सब कुछ छूट जाने के बाद भी
बची रहती है उसकी आँखों में
एक चिनगारी
और स्मृतियों की खुशबू।

एकान्त श्रीवास्तव

ग्राम-कोमा (राजिम)

रायपुर (म. प्र.)

पाकिस्तानी कहानी

“सवालिया गुंज”

- एम. ए. खान

वह कमरे में दाखिल हुआ तब उसका चेहरा खिला हुआ था। मैले-कुचले कपड़े पहने वह बूढ़ा शख्स बड़ी फुर्ती से नजदीक की चारपाई पर बैठ गया। टांग पर टांग रखी, मूछों पर हाथ फेरा और सिर से पुरानी सफेद पगड़ी उतार सिरहाने रखी। उसके हाथ में पकड़ी हुई तस्बीह के दाने उसके सिर के बालों की तरह सफेद थे। लम्बी दाढ़ी पे सफेद मूछें ऐसे नजर आ रही थी जैसे चमेली के दो फूल नाक में उडस दिये गये हों। बड़े फख्र से उसने सिर उठाया, चेहरा इधर-उधर घुमाया और फिर उसकी नजर मेरे ऊपर जमकर रह गई। अब उसके चेहरे पर हिकारत के आशार नजर आये। उसने नफरत से मुझे देखा। जमीन पर थूका और मुंह दूसरी तरफ फेर लिया।

हालत अपनी भी कुछ अजीब-सी थी। अगरचे कल से खाना बकायदगी से मिल रहा था, लेकिन एक सख्त बान की चारपाई पर बगैर बिस्तर के रात गुजारी थी, उस कमरे में जहां न रौशनो न पानी और न ही गर्मी का इंतजाम, अगरचे रात को ताकतदीन ने हमारे साथ कुछ नरमी बरती थी और दो कम्बल दिये थे, लेकिन हर किस्म की चापलूसी के बावजूद उसने मुझे मेरे दास्तों से नहीं मिलने दिया था। सारी बातों का ताकतदीन के पास एक ही जवाब होता।

“यार मेरी नौकरी के पीछे क्यों पड़े हो ?”

अलबत्ता ताकतदीन की भलमस्साहत थी कि खाने को चेक करने के बाद मुझे जरूर दे देता लेकिन उसकी चेकिंग भी निराली होती। टिफन को ऊपर से नीचे तक देखता, चावलों को खंगाल डालता, रोटियों के टुकड़े-टुकड़े कर डालता। शाम के खाने पर मुझसे न रहा गया तो मैंने पूछ ही लिया।

“ताकतदीन साहब ! इस खाने में कोई राकेट या एटमबम छुपा हुआ है ?”

वह गुराया,

“हां तुम्हारी कोई भी पर्ची अन्दर से बाहर या बाहर से अन्दर आ गई तो हमारे लिये वह बम ही है।”

दर असल यह शामत इसलिय आई कि हमें शोक हुआ हकूक हासिल करने का। और हकूक में फिर मआशी, थकाफती तालेमी, रोजगारी और जम्हूरी हकूक। गर्ज हम सारे ही हकूक की बात करना चाहते थे। जो कि एक ही नारे में पूरे न होते थे।

बस दोस्तों ने जोश दिलाया और हमने अपना फर्ज अदा करने का फैसला कर लिया। माल-मूआद और अन्दर की खबरें तो थी ही। रात ही रात किताबत हुई और फिर अगले दिन सुबह ही सुबह “प्रोग्रेसिव” के नाम से मजदूरों में एक अखबार बांटा जा रहा था। मजदूरों की नूमाइंदा यूनियन ‘प्रोग्रेसिव वर्कज यूनियन’ के सेक्रेटरी ने कुछ दिनों पहले हुई बोर्ड आफ डायरेक्टर की मीटिंग का डाक्यूमेन्टरी सबूत पेश कर दिया था जिसमें फैसला हुआ था कि पांच साल तक किसी को प्रमोशन नहीं दिया जाएगा, दो साल के अन्दर-अन्दर पांच हजार मजदूरों की छुट्टी की जाएगी और प्रोग्रेसिव वर्कज यूनियन को कायंइर करने के लिये पाकिस्तान स्टील लेबर यूनियन बनाई जायेगी जो कि हकूमत पार्टी और मनेजमेन्ट की मदद से एक साल के अन्दर-अन्दर अपने पांव पर खड़ी होगी।

बस फिर क्या था। खुफिया राजों की असाहत हानी कि हकूमते-सिध के फोन बजने लगे। स्टील मील्ज के डायरेक्टर जनरल बिग्रेडियर मुश्ताक अजीज ने खास थाने के थानेदार ताकतदीन को अपने एक्जक्यूटिव ऑफिस में बुलाया और हुक्मे-नादिरशाही सुनाया।

“इलियास को अन्दर कर दो।”

“जी साहब !” ताकतदीन ने एडियां बजाईं।

यह थाना स्टील मील्ज के अहाते में खास बिग्रेडियर साहब के एमा पर ही बनाया गया था। इसलिए उसके अमले को हुक्मे-नादिरशाही से नापसंदगी जाहिर करने की मजाल कैसे हो सकती थी ? हम तुरन्त घर लिये गए।

तो यह थे वे हालात जिनके नतीजे में हम कल से इस कमरे में बैठे थे। रात भर मुख्तलिफ सवालनात परेशान करते रहे। क्या हमारे खिलाफ कोई केस बनाया गया है ? क्या दोस्त या सगो-साथी जमानत करवाएं ? या फिर कोई जलसा जुलूस मुस्तजिम किया जाएगा, हमें पुलिस वाले तो कुछ भी नहीं बता रहे थे अलबत्ता जब आज सुबह सवेरे ए.एस.आई. से नवां-ए-वक्त अखबार लेकर देखा तो अन्दर के सफे पर एक छोटी-सी खबर ने हमारी दहशत में इजाफा कर दिया। खबर में हमारा नाम तो न लिखा गया था लेकिन प्रोग्रेसिव वर्कज यूनियन के सेक्रेटरी नशरुअसअत को बा लो आसत तौर पर लपजों के हेर-फेर से

मास कर पड़ते ही पुलिस वालों ने बताया "बाबाजी बैठ जायें। रिपोर्ट लिखते वाला थलस करवाती भेद कर गया है," आता ही होया, भा जाया तो रिपोर्ट लिख दी जायेगी, दूसरी दफा बताया "आप ने सारी बात सुन ली है अब आप यहाँ साथ वाले कमरे में पछोटीपछोटी देखें दफा लिखें आदमी से बात न करना वरद बहुत खतरनाक शख्स है, काफिर है, कम्प्यूटिस्ट है, आप फिक न करें हमने फियाही गाव भेजे हैं, वे लफलीश कइके आते ही हंगे और यकीनन चीर की भाँस में लेते आयेगें।

तीसरे दफे जब बाबाजी ने पूछा तो वहाँ लहेजे में कहा गया "बूँ ! आराम से बैठ, कुछ क्या तकलीफ है यहाँ पर हम तेरे काम में ही लागे हैं।"

अब मुझे खेदा हुआ कि यहाँ थलस आदमी ठगों के छोटगी, मुझे उसकी सादगी पर हँसी थी आती थी, गुस्सा भी होय चढ़ गया। अब इसकी जब खाली होनी तब ही जान होय चढ़ गया है,

अब मुझे खेदा हुआ कि यहाँ थलस आदमी ठगों के छोटगी, मुझे उसकी सादगी पर हँसी थी आती थी, गुस्सा भी होय चढ़ गया। अब इसकी जब खाली होनी तब ही जान होय चढ़ गया है,

कर्मनिष्ठ, कानिष्ठ और कर्मिष्ठ काट कर दिया गया था जो कि स्टील पीन को गलाम करने के लिये मजदूरी से बहस्यमी फलामा बाहल है, बहर के नतीजे मया हो सकने के उस का हूँ बहूँ दम था, यही बहल था कि दहलल है हमारी पूछ ही बहा दी, यह तो सही है कि हम मजदूरी के हक के लिये हरे किरम की कुरबानी देने पर तैयार थे लेकिन बूदा मवाद है कि हमने आज तक कभी नया खल को देखा भी नहीं था और न ही हम जानने थे कि कर्मनिष्ठ कानिष्ठ बन जावे है या क्या हरे मजदूर जो आने तक की बातें करे बह कर्मनिष्ठ हो जाते हैं ?

मास, बहल, वे आरामी और दहलल ने मिल-जुलकर हमारी हालत बकाई पतली कर दी थी, ऊपर से सोने पर सुहोना जब बहूँ मिश्र ने हरे किरान से देखा, जमीन पर घुँका और मुँह ईसरी तरफ छरे लिया लेकिन फिर यह सोचकर दिल को तयारली दी कि बनी साणी तो आयी, बरना कल से अकेला हो पड़ा हूँ,

बस गुजरना रहे, कमरे का दरवाजा बन्द था और फिर सोस हो गई, बूदा एक-दो बार बाहर गया और फिर बापस आ गया, यूँ तो दरवाजा लक न था लेकिन किबाहों के पास बसल है से बच पर रह बरल काई न कोई पुलिस मन बंठा हो रहल था, थाम को हमार दोरुन यार खाना लेकर आयो तो मजार के मजबुर की तरह बैठे हुए पुलीसीय न खाना हमारी चारपायी पर हस तरहे ला पटक जो हरे हलिस नाई की कब पर लात मार रहे हो, अइ जब हमने खाना शुरू किया तो बाबा जानी से भी दरवास्त की कि वे हमारे साथ खाने से मरीक हो जाए.

बाबा जी ने पहले तो हफार किया लेकिन हमारी बाला जी ने पढ़ल तो सजबूर होकर चन्द लफसे उठा लिये, यूँ तो फलन थी हमने बाबा से बह करले की कोशिश की थी लेकिन उसने लिपट हो न दी लेकिन जब वे हमारे नयक-खबर बन गए तो नम पूछ गए, जब गप गप शुरू हुई तो बाबा जानी ने बतया कि वे नववीकी गाँव के एक खलिर है, उनकी अपनी थोड़ी-थी जमीन है नई है.

हैसा यह कि रात की बाबा जी की जमीन से किसी ने फसल काट ली, मुबह हुई तो बाबा जी नमान पढ़ने के बाद अपनी फमीन का मूआदना करने और अपने अहसास मलिकम को बरकीन देने बहा गए तो खाली जमीन देखकर उहलने फिर पीट लिया,

"यह काम सभ्य बहरे की मरजी के बाँर नहीं हो सकल."

बाबा अलल खल के दिमाग से एक गूँज उभरी, जोश और अलल ने फसल किया कि मजदूरी का जने से रिपट कराना चाहिए.

तो यूँ बाबा जी मुबह से रिपट लिखवाने बैठे हुए हैं, बतया कि अब तो उनकी जी बहल रहे हैं कि अपनी अलल पर

उन्होंने कहा कि तुम्हारा कोई माल-वाल चोरी नहीं हुआ तुम खामखाह गांव वालों को परेशान करने थाने आये हो। वड़ेरे सांय ने बताया है कि तुम न तो खुद काम करते हो और न ही दूसरों को आराम से जीने देते हो सायें ने कितनी बार कहा है कि उस छोटे-से जमीन के टुकड़े से अलना रखा तुम्हारा कुछ नहीं होगा उसे भी सायें की जमीन में शामिल कर दो लेकिन तुम मानते ही नहीं, पुलिस सुबह से तुम्हारे काम में मसरूफ थी उसकी फीस पचास रुपये अदा कर दो, तुम्हें छुट्टी मिलेगी वरना फाड़ के जुर्म में तुम्हें जेल जाना पड़ेगा।

मेरे पूछने पर बूढ़े ने बताया कि "पुलिस वालों ने मुझे मारा भी है और हकीकत है कि सायें मेरी जमीन को कई बार खरीदने की कोशिश कर चुका है मगर मैंने यह इन्कार किया कि यह टुकड़ा मेरे बाबा-दादों का है मैं इसे किसी भी हाल में नहीं बेचूंगा। मेरे इन्कार से वह जल-भुन गया था, मुझे लगता है यह साजिश उसने इसलिए की है कि मैं तंग आकर जमीन बेच दूं।

मैं उसे क्या मशवरा देता ? अगर वह जमीन बेचता तो उसका अपना ठिकाना न रहता और अगर नहीं बेचता तो रोजाना पुलिस और वड़ेरेसायें की गालियां उसकी किस्मत में लिखी जा चुकी थी।

तब मैंने उस बूढ़े से पूछा था कि अब उनके क्या इरादे हैं ? बूढ़े की आंखें फिर भर आईं।

"मेरे सामने तो अब अंधेरा है। बूढ़िया और जवान बेटी घर में रो रही होगी, कि बूढ़ा थाने गया था अब तक वापस नहीं आया। और मेरे पास तो कुल दस रुपये हैं जो किसी भी तरह ताकतदीन को नमं नहीं कर सकते।"

मैंने बाबा जी को तसल्ली दी कि जब सुबह मुझे दोस्त-यार खाना देने आयेंगे तो तुम किसी तरह उनसे मिलना और उन्हें कहना कि इलियास ने पचास रुपये मांगे हैं। दूसरी सुबह जब खाना खाया गया तो बूढ़ा बरतन वापस करने के बहाने कमरे से बाहर निकला। उसे इतनी रियायत बहरहाल थी। उसने यारों को बताया और यारों ने शाम के खाने में रोटी के अन्दर यह कागज की पर्ची छुपकार भेज दा, जिसको ताकतदीन अक्सर तलाश करता था लेकिन हमारी किस्मत कि ताकतदीन ने उस दिन खाना चेक नहीं किया। यूँ उस पर्ची की बदौलत बाबा की जान छुटी। मजे की बात यह है कि बाद में जब मैंने ताकतदीन को बताया कि रकम किस तरह हमारे पास पहुँची थी तो ताकतदीन ने मुझों पर हाथ फेरते हुए कहा। "वैसी पर्ची तो चाहो जितनी मंगवा सकते हो। मगर कोई सरकारी पर्ची मत मंगवाना वरना खैर नहीं रहेगी।"

हम यूँ तो ताकतदीन की बात सुन रहे थे मगर हमारा ध्यान उन अलफाजों पर केन्द्रित था जो बूढ़े अल्ला रक्खे ने जाते वक्त बुदबुदाए थे।

"इस्लामी कानून के इन मुहाफिजों से तो यह दाढ़ी मुँड़े काफिर और कम्युनिस्ट ही अच्छे हैं।"

सामने पड़ी हुई तस्बीह मेरा मुँह चिढ़ा रही थी जो कि बाबा जी जाते हुए छोड़ गये थे। उन्हें शायद अब उसकी जरूरत नहीं रह गई थी। मुझे याद हैं, जाते वक्त उनके उस हाथ की ऊंगलियाँ, जिसमें तस्बीह के सफेद दाने फिसला करते थे, सख्ती से अकड़ गई थी और उनकी खुली हथेली ने एक मुट्ठी की शक्ल अख्तियार कर ली थी। मेरे अन्दर एक सवालिया गूँज उठी।

"एक नमाजी, सीधे-सादे मुसलमान को कम्युनिज्म का पाठ किसने पढ़ाया मने या ताकतदीन ने ? जहाँ तक मुझे याद है मैंने तो एक बार भी अपनी जवान से यह लफ्ज अदा नहीं किया था।

उर्दू से अनुवाद

-मनोज रूपड़ा

मयूरी स्वीट्स

स्टेशन रोड, दुर्ग (म. प्र.)

गज़ल / घर के खर्च की तरह

● रामकुमार रामरिया

खामियां अक्सर पड़ी जाती हैं परचे की तरह ।

और दुश्वारी के खर्च, सिर्फ चरचे की तरह ॥

बंदिशें ही बंदिशें, बदा-नवाजों के लिए ।

उनको बंदों की जरूरत, है अगरचे की तरह ॥

बांधकर अपना पुलिदा जेब में रख करके वो ।

दोस्तों के बीच फेंके, जेब-खरचे की तरह ॥

इस गुनह निगार दीलत और दुनिया के रिवाज ।

आँख में अपनी पड़े हैं तेज मिरचे की तरह ॥

तुम भी क्या कर लोगे भाई कार आमद इंकलाब ।

घर में सारी सखिशयत हैं, घर के खर्च की तरह ॥

(पृष्ठ १ का शेष भाऊ समर्थ : एक परिचय)

का जीवन भी जिया है। उन्होंने कई बार बड़े नगरों और बड़ी नौकरियों के प्रस्तावों को अस्वीकार करके अपनी धुन को ही जारी रखा है। आज इस तरह का व्यक्तित्व भारतीय कला में दूसरा नजर नहीं आता।

भाऊ समर्थ इस वर्ष जीवन के साठ वर्ष पूरे कर रहे हैं।

ज्ञान रंजन

महासचिव

म. प्र. प्रगतिशील लेखक संघ

(पृष्ठ १ का शेष भाऊ समर्थ की षष्ठि पूर्ति)

दो दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। म. प्र. ले. सं. द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उनके समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चाएं हुईं और उनका मल्यांकन किया गया। भाऊ समर्थ प्रगतिशील लेखक और चित्रकार हैं। वे ऐसे रचनाकार हैं जिनके समीप जाने पर मन का विश्वास मजबूत होता है। "सब जगह ऐसा ही चल रहा है— भ्रष्ट और अव्यवस्थित!" इस तरह के हताशापूर्ण आत्मघाती विचार तत्क्षण समाप्त हो जाते हैं; उनसे बातें करके अस्तु! उनके व्यक्तित्व पर परिचयात्मक आलेख तैयार किया है सुश्री उषा बैरागकर आठले ने। जिसे हम इस अंक में दे रहे हैं। उन पर श्री ज्ञानरंजन की विशेष टिप्पणी भी इस अंक में है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि "आरंभ" में उनका रेखांकन पहली बार छप रहा है। इन सामग्रियों के माध्यम से पाठक उन्हें और अधिक समझ सकेंगे ऐसा हमारा ख्याल है। षष्ठिपूर्ति के अवसर पर हम उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं।

विदेशी कहानी

विश्व में सैकड़ों राष्ट्र हैं उनकी भिन्न-भिन्न संस्कृतियां हैं। भिन्न-भिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाएं हैं। प्रत्येक देश में साहित्यकार, कलाकार भी होते हैं। वे अपने समय की साक्ष्य में निरंतर सृजनात्मक कार्य करते रहते हैं। उनकी रचनाओं के बारे में जानने की उत्सुकता प्रायः सब में स्वाभाविक रूप से होती है। इसी स्वाभाविक उत्सुकता के फल स्वरूप हम इस बार पाकिस्तानी कहानी "सवालिया गूंज" इस अंक में दे रहे हैं। यह कहानी मूल उर्दू में छपी थी। लेखक हैं श्री एम. ए. खान। इसका हिन्दी रूपान्तर किया है; उभरते हुए युवा कथाकार श्री मनोज रूपड़ा ने। इस रचना से वहां के समकालीन कथा साहित्य का परिचय मिलेगा।

इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं भी इस अंक में हैं। कु. सुधा गोखले की कविता पहली बार "आरंभ" में छप रही है। कुछ परिवर्तन भी किया है हमने इसमें। पूर्व की भांति आपकी पत्रों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

दादूदयाल (सम्पादक)

लक्षण

मैंने एक दिन
खोदी धरती
गहरी और गहरी।

बो दिये
सुनहरे-सुनहरे
गेहूँ के दाने।

काटकर मोड़ दी
नदी की धारा
धरती में पसर गया
पानी ही पानी।

निरन्तर चमकता
सूरज
बिखेर दी रोशनी
जाग उठे पीछे हरे-हरे।

फिर आई बालियां
पक गई फसलें।

दाने दाने को पीसा मैंने
रात दिन
दिन रात।

देखा
आटा था सफेद।

मैं बावरा !
ढूँढ रहा था उसमें
जाति, धर्म, भाषा,
प्रांत के लक्षण।

-स्वरूप जेन

ज्योति प्रसवित होगी

सुबह तक
ठंडी नहीं हुई थी
सांझ की जली चिता।

नम आंखों में व्यथा लिए
सिर पर हाथ धरे
खामोश बैठे है-पिता श्री।

पास ही पड़ी है
राख की ढेरी बन
उनकी बीस बरसों की
कोमल भावनाएं
दुहिता-स्नेह।

मर्म वेदना के सागर में
पल पल उठती
आक्रोश की लहरें।

हां ! है !
लहरों की अपरिमित शक्ति !
बावजूद इसके
उसकी अपनी सीमा है
बाहर नहीं जा सकती।

बन गई बलि
बीस वर्षिया प्रतीक्षा
दहेज लोभियों के हाथों
या
ली है अग्नि परीक्षा
फिर एक बार
पवित्रतावादी पागलों ने।

पर कोख की चित्कार
यूं ही नहीं जाती खाली
एक ज्योति प्रसवित होगी
अंधेरा खत्म करने।

-कु. सुधा गोखले

(पृष्ठ ३ का शेष)

भाऊसमर्थ : निरंतर क्रियाशील व्यक्तित्व

अपने आप ही संवाद आरम्भ होता है। इसी प्रभाव को शब्दबद्ध करने की कोशिश की जा सकती है। चित्र को लगातार देखने पर मन में बनने वाले मूड्स पर विचार करके उन्हें शब्दों में व्यक्त किया जाय तो यही उस अमूर्त चित्र की आत्मनिष्ठ स्वरूप की भाषा होगी और वही उसका अर्थ होमा।" इस वक्तव्य को दूसरी ओर से भाऊ की रचना-प्रक्रिया का सार भी समझा जा सकता है क्योंकि जिस क्षण में वे चित्र बनाने बैठते हैं उस क्षण के मूड अनुसार चित्र का विषय उनके अवचेतन से स्वतः उभरकर अपने अनुरूप रंगरेखाओं की निर्मिति करता है। इसके लिए उन्हें कैनवास के सामने बैठकर यह नहीं सोचना पड़ता कि इस विषय के अनुकूल किन रंगों की बोतलें या ट्यूब्स वे खोलें या किस आकार में रेखाएँ खींचें। वे रंगों के स्वभाव और उनकी भाषा को गहरे तक आत्मसात कर चुके हैं तथा रेखाओं की लम्बाई-चौड़ाई-मोटाई के प्रभाव के बारे में अच्छी तरह जानते हैं इसलिए यह संभव होता है।

भाऊ की चित्र-निर्मित अवचेतन से चेतन मन का सस्ता तय करती है परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि उनकी कला में व्यक्ति अवचेतन के रहस्यों का तानाबाना ही उभरता हो। भाऊ के सक्रिय एवं सजग क्रियाकलापों एवं सतत चलने वाली विचार-प्रक्रिया के अंश, जो अवचेतन में पेंठते चले जाते हैं किसी उत्तेजित क्षण में भावों में बदलकर रंगों और रेखाओं के माध्यम से कैनवास या कागज पर उतरते हैं। उनकी कला-साधना भावक्रीड़ा के बीच मूर्त होती है। जहाँ एक ओर उनके लेखों और भाषणों में चेतन रूप से किया शब्दों का चुनाव होता है वहीं दूसरी ओर चित्रों में अवचेतन की भावक्रीड़ा में से उभरने वाली रसलहरियाँ साकार होती हैं, जो आसानी से शब्दों में नहीं पकड़ी जा सकती।

भाऊ समर्थ जैसा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का शायद ही कोई चित्रकार होगा जो सामाजिक आन्दोलनों में भी निरन्तर सक्रिय रहता आया हो और साठ वर्ष की उम्र में भी चित्र-सृजन तथा विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए निरन्तर यात्रा करता रहता हो।

उषा बेरागकर आठले

सिविल लाइम्स

रायगढ़ (म. प्र.)

४९६००१

भोर के सुकुवा-तारो जागो

जीवन पट्ट
खैरागढ़

दुख - दर्दों के मारो जागो

राख दबे अंगारो जागो

जागो कि यह नींद तुम्हारी पलकें कहीं न सी डाले।

एक-एक सपने पर डाले कहीं न यह सी-सी लाले ॥

अध - सुरगें नहीं, अंधेरा-

पगडंडो पर छाया है,

मंजिल से कुछ दूर काफिले-

को जिसने भरमाया है,

सही दिशा की ऐसे में-

पहचान कहीं खो जाती है,

वर्तमान की दिशा-हीनता

भूतकाल बो जाती है,

भोर के सुकुवा - तारो जागो

चिड़ियों के हरकारो जागो

जागो कि भावी पीढ़ी को पढ़ें न किरणों के लाले।

इस बिगड़े मौसम में तुम ही हो सूरज लाने वाले ॥

अफवाहों के चोराहे, सनसनी-

खेज का सच क्या है?

बिन मांगे मिलने वाली-

मखमली सेज का सच क्या है?

भूल - भूलेंया छोटी है, पर

बदहोशी का खतरा है

चांदी की काली आंघी में

खामोशी का खतरा है।

ओ भ्रमिको, -बनिहारो जागो

सुबह के भागीदारो जागो

जागो कि मन की चिनगी पर कोई मत डाका डाले।

कोई मत मेरे हिस्से से अपनी जेबें गरमा ले ॥

कलम, कुल्हाड़ी, चाक हथौड़ी

हल व बसूला रुके नहीं,

दादा की पगड़ी का झंडा

वृद्ध कमर - सा झुके नहीं

यह आरोपित शत, खुली-

आँखों में तब कट जायेगी,

पूरब की संगीन - सियाही

काई - सी फट जायेगी,

लेखक, कृषक, कुम्हारो जागो

शिल्पी, बढ़ई, लुहारो जागो

माना कि जागे लोगों ने ज्यादा ही आंसू डाले।

अब जागो कि आँखें दुख के सावन - भादों पाले ॥

दामोदर रेडियो एवं साऊण्ड सर्विस

पुराना बाजार दल्ली राजहरा (दुर्ग)

हर प्रकार के रेडियो, टेप रिकार्डर के विक्रेता एवं सुधारक
इको लाइट एव साऊण्ड की व्यवस्था है।

प्रो. दामोदर साहू

सौन्दर्य प्रसाधन होजियरी एण्ड स्टेनरी सामान मिलने का
एक मात्र स्थान

साहू जनरल स्टोर्स

न्यू मार्केट (सब्जी बाजार) दल्ली राजहरा

प्रो. डी. एल. साहू

मेचीन्ग सेन्टर

न्यू मार्केट, दल्ली राजहरा जि.-दुर्ग (म. प्र.)

फेन्शो, कपड़े, घड़ी व आभूषण के विक्रेता
आपका सन्तोष ही हमारा ध्येय है।

प्रो. धरम चंद जैन

जैन प्रोविजन स्टोर्स

उत्तम खाद्य सामग्री आपूर्ति का एक विश्वसनीय स्थान

न्यू मार्केट, दल्ली राजहरा दुर्ग (म. प्र.)

डॉ. सुमंत गुप्ता बी.ए.(आनर्स)एम.ए.(कला एवं पुरातत्व)पी.एच.डी.

द्वारा रचित संगीत एवं ललित कला पर शोध ग्रंथ :-

- (१) गुप्त वंशीय अभिलेखों का धार्मिक अध्ययन।
 - (२) राजतरंगिणी का सांस्कृतिक विवेचन।
 - (३) प्रमुख पुराणी में कला के तत्त्व।
- शोधार्थी एवं संगीत कला प्रेमियों के लिए उपयोगी।

श्री ज्ञान इण्टरप्राइजेज

स्टील फर्नीचर के विक्रेता

गुरुद्वारा के पास, दल्ली राजहरा

जिला:- दुर्ग (म. प्र.)

डॉ. आम्बेडकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी

मेडिकल कालेज एवं अस्पताल

एम. बी. ई. एच. तीन वर्षीय रेग्यूलर डॉक्टरों

कोर्स:- योग्यता-मैट्रिक उत्तीर्ण।

सम्पर्क:- पंचशील मेडिकल स्टोर्स, दल्ली राजहरा, जि.-दुर्ग (म. प्र.)

पावर एवं धूप के चश्मे की एक मात्र दुकान

अरोरा आप्टिकल

बी. एस. पी. शॉपीन्ग काम्पलेक्स

दल्ली राजहरा, दुर्ग (म. प्र.)

शुभ कामनाएं

महामाया श्रमिक

सहकारी समिति मर्यादित

ब्रांच :- कोकान

रजि. :- २१५१

रेजिंग कान्ट्रेक्टर भिलाई स्टील प्लांट भिलाई

कार्यालय :- एटक ऑफिस, दल्ली राजहरा
(एस. के. एम. एस.)

जिला-दुर्ग (म. प्र.)

महावीर जनरल स्टोर्स

मेन रोड, दल्ली राजहरा जि.-दुर्ग (म. प्र.)

फोन नं. ७४

चाँदी के फेन्सी जेवर व जनरल गुड्स, स्कूली व अल्प
धार्मिक पुस्तकें, सूटकेस मिक्सी, घड़ियाँ, कूकर आदि के विक्रेता

ही. आई. पी. धातुयाने कनात, गेट, स्टेज, माइक, बर्तन, गद्दे
किये एवं इलेक्ट्रिक डेकोरेशन के सामान उचित दर पर
मिलने का एक मात्र स्थान

ए. एम. किराया भंडार

शाप नं. २२, टाऊन शिप, शांतिनाम कांम्प्लेक्स,
दल्ली राजहरा

प्रो. अरसुल महन्ती ए. एम.

सेवा सदन

(डॉ. सी. एस. नाथ का औषधालय)

महामाया माइन्स-ब्रांच-डॉडो

जिला-दुर्ग (म. प्र.)

जनरल प्रेवेंटशन एवं कुष्ठ रोग निदान सलाहकार
(अधिकृत डेनलेप सोसाइटी डेनमार्क)

डॉ. सी. एस. नाथ
बी. ए. एम. एस.)

हरिराम राकेश कुमार

गल्ला तिलहन एवं रासायनिक खाद के थोक व चित्तूर विक्रेता

मु. व पोस्ट-बतौली

जिला-सरगुजा (म. प्र.)

पिन : ४९७१०१

मुक्ता बुक डिपो

जेन भवन के पास, दल्ली राजहरा (दुर्ग)

सभी प्रकार की स्कूली कालेज से सम्बन्धित एवं धार्मिक व
प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें व कापियाँ मिलने का स्थान

सोनी भोजनालय

जेड. ई. आफिस के पास, दल्ली राजहरा,
जिला-दुर्ग (म. प्र.)

हमेशा ताजा स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन
मिलने का विश्वसनीय स्थान

हस्ताक्षर साहित्य समिति दल्ली राजहरा का प्रथम प्रकाशन

अरुणिमा (काव्य संकलन)

सम्पादक द्वारा :- बंगाली प्रसाद ताम्रकार / उमाशंकर अग्रवाल

मूल्य :- दस रुपये

प्राप्ति स्थल :- डॉ. देशमुख का दवाखाना, मेन रोड, दल्ली राजहरा ४९१२२८

आरंभ के लिए शुभकामनाएँ

प्रकाश कटपीस स्टोर्स

उत्कृष्ट फेन्सी एवं टिकाऊ कपड़े और सोने चाँदी के आधुनिक
आत्मक आभूषण वाजिब दाम पर मिलने का विश्वसनीय स्थान



मेन रोड, दल्लो राजहरा
जिला-दुर्ग (म. प्र.) ४९१२२८

आरंभ के लिए शुभकामनाएँ

महामाया श्रमिक सहकारी समिति मर्या.

महामाया माइन्स

रजि. - २१५१

अध्यक्ष
बोधनसिंह ठाकुर

सचिव
कृष्णाराम बादेलकर

सदस्यगण

मानदास, शंकर, केशवराम

आरंभ के लिए शुभकामनाएँ

लायन गुलबीर सिंह भाटिया

समाज सेवी एवं गणमान्य नागरिक

दल्लो राजहरा, जिला-दुर्ग (म. प्र.)

- (१) आरंभ बुलेटिन अनियतकालीन और अव्यवसायिक (केवल सदस्यों के लिए)
(२) सम्पादन एवं प्रबंधन पूर्णतः अर्धतनिक (३) प्रकाशक :- प्रगतिशील लेखक संघ, राजहरा इकाई
(४) सम्पक सूत्र :- दादूदयाल -16 I/II B-अस्पताल सेक्टर राजहरा 491228 (म. प्र.)
सहयोग राशि :- २-०० मुद्रक :- अजन्ता प्रिन्टिंग प्रेस, पोलसाय पारा, दुर्ग (म. प्र.)

356/B, सड़क 39 पंडरहली